प्रेम एक गहरा अहसास है...

ब्र.कु.अनुज,दिल्ली

प्रेम अपने आप में देना, अपना सर्वश्रेष्ठ देना, किसी भी चीज़ के साथ इसकी तुलना नहीं है। ईर्ष्या, जलन, बेइमानी जैसी चीज़ें प्रेम में कतई संभव नहीं हैं। जैसे माली जब फूलों पर श्रम करता है, माँ अपने बच्चों पर श्रम करती है, लेकिन ये दोनों बदले में कुछ नहीं मांगते, उनका खिलना, इनका अपना खिलना हो जाता है।

प्रेम अपने भीतर छिपी एक शक्ति का नाम है जो अपने वजूद को बरकरार रखते हुए दूसरे से मिलती है। सिर्फ मानव मात्र के लिए उसका प्रेम नहीं होता बल्कि समूची सृष्टि के प्रति वह अपने प्रेम को दर्शाता है। इस दशा को हम अपनी भीतरी स्वतंत्रता और आत्मनिर्भरता से ही प्राप्त कर सकते हैं। प्रेम में सबकुछ `देना' है, उसमें कुछ लेना नहीं है। देना परम आनंद, परम लक्ष्य होगा। प्रेम अपने आप में देना, अपना सर्वश्रेष्ठ देना, किसी भी चीज़ के साथ इसकी तुलना नहीं है। ईर्ष्या, जलन, बेइमानी जैसी चीज़ें प्रेम में कतई संभव नहीं हैं। जैसे माली जब फूलों पर श्रम करता है, माँ अपने बच्चों पर श्रम करती है, लेकिन ये दोनों बदले में कुछ नहीं मांगते, उनका खिलना, इनका अपना खिलना हो जाता है। जिस किस्म का दायित्व वह अपने लिए अपने भीतर महसूस करता है, वैसे दूसरों के लिए भी होता है। अर्थात् आपके भीतर उसके प्रति एक दायित्व बोध होगा, तब विकास का समान प्रयत्न होगा, क्योंकि तब कोई भी दूसरा नहीं है। माँ बच्चे को दूसरा नहीं मानती, प्रेमी-प्रेमिका एक दूसरे को `दूसरा' नहीं मानते। वहाँ दूसरा है ही नहीं। आप ही सर्वत्र हैं और यही भावना अगर समाज में आ जाये तो स्वर्ग आने में देर नहीं लगेगी।

शायद मनुष्य प्रेम को समझ नहीं पा रहा

मनुष्य की किसी और जगह होने की कल्पना यह सिद्ध कर देती है कि वह आपके पास नहीं है। अगर एक मनुष्य

दूसरे मनुष्य से प्रेम नहीं कर सकता तो यह कैसे संभव है कि वह ईश्वर से प्रेम करे। वह ईश्वर से प्रेम करने का सिर्फ ढ़ोंग कर रहा है और ढ़ोंग भी इसलिए कर रहा है कि उधर से कोई उत्तर नहीं आ रहा। कोई यह नहीं कह रहा कि अब बस करो, इतना झूठ मत बोलो। ईश्वर हमेशा से चुप है और बोल हम रहे हैं। आज ईश्वर के नाम पर हम बड़ी शान से लोगों को मारते हैं, काटते हैं, परन्तु ईश्वर से प्रेम इन बातों को तो बिल्कुल दरकिनार कर देगा। हम दूसरों पर अधिकार तो जमाना चाहते हैं, उसे अपना हिस्सा भी बना लेना चाहते हैं, उसे हम अपनी मिलकियत भी समझते हैं और यह भी सोचने लग जाते हैं कि वह वही सोचे जो हम सोच रहे हैं। यह कोई प्रेम नहीं है, यह तो पॉज़ेशन (मालिकपना) है। जब हम वास्तव में प्रेम करते हैं, सिर्फ तभी हम जान पाते हैं कि जीवन है क्या। जब आपसे कोई पूछे कि जीवन का सर्वोत्तम क्षण कौन सा है, तो शायद आप कहेंगे कि जब आप स्वयं को भूल जाते हैं। जब आप दुनिया के हिसाब से कहें तो किसी की आँखों में, किसी की बाहों में, जब आप इसके लिए प्रस्तुत न हों और यह घट गई हो। अगर हम इसको यह कहें कि हमारे भीतर कोई ऐसा रासायनिक परिवर्तन हो जाये, जिसमें प्रेमी न रहे, वो खो जाये। चाहे प्रेमी हो या ईश्वर, अपने विलय को दूसरे में खो देना अर्थात् स्वयं को खो देना ही प्रेम का दूसरा नाम होगा।

7 कदम राजयोग की ओर...

प्रश्नः पवित्रता केवल ब्रह्मचर्य ही नहीं...हमें ब्रह्माचारी भी बनना है। हम पवित्रता के क्षेत्र में किन-किन बातों में ब्रह्माचारी बनें?

उत्तरः शिव की संतान बनकर ब्रह्मचर्य का व्रत अपनाना तो प्रथम कदम है। परन्तु सम्पूर्ण पवित्रता तो गगन में चमकते सूर्य के समान है, पवित्र आत्माएं तो इस विश्व के लिए वरदान हैं, वे जहान के नूर व सृष्टि के आधारमूर्त हैं।

ब्रह्मचर्य अपनाने के बाद काम की सभी इच्छाओं व भावनाओं का त्याग करके स्वप्न सात्विक बनाने चाहिए। सभी नर-नारी आत्माएं हैं। हम भी कभी नर थे तो कभी नारी। दूसरे भी कभी नर थे, कभी नारी - यह आत्मिक भाव बढ़ाना चाहिए।

हम पवित्र आत्माओं को विश्व का कल्याण करना है, हम विश्व कल्याणकारी हैं इसलिए चित्त को शुभभावना, क्षमा-भाव व निःस्वार्थ प्यार से भर देना चाहिए। बदले की भावना हमें लक्ष्य से दूर ले जाती है।

वाणी अति सुखदाई व निर्मल, क्रोध, रोब व अहं से मुक्त हो, तब टकराव-मुक्त पवित्र स्थिति का सुख प्राप्त होगा। जीवन से आलस्य, व्यर्थ व साधारण संकल्प, ईर्ष्या-द्वेष, घृणा, तेरा-मेरा छूटता चले तब पवित्रता की अलौकिकता चेहरे के तेज को बढ़ा देती है। ऐसी महान पवित्रात्मा सदा परमात्म-रस अथवा आनंद में तृप्त रहे, ये सब है ब्रह्मा बाबा का आचरण करना।

प्रश्नः- परमात्मा ने कहा कि सच्चा दिल, साफ दिल व बड़ा दिल हो तो वो सदा दाल-रोटी खिलाता ही रहेगा। क्या है ये तीन प्रकार की दिल? उत्तरः जहां मन में चालाकी हो, धोखा देने का संस्कार हो, कदम-कदम पर मनुष्य झूठ का सहारा ले। करे कुछ व कहे कुछ-ये सच्चा दिल नहीं। जो जितना पवित्र है, उसका दिल उतना ही सच्चा है। अपने सत्य स्वरूप में रहने से दिल सच्चा होता जायेगा। सच्चे दिल से सेवा करना भी सच्चा दिल है। सच्चे दिल से दिल लगाकर पुरुषार्थ करना भी सच्चा दिल है। सच्चाई हमारा नैचुरल संस्कार बन जाए।

साफ दिल का अर्थ है -मन में किसी के लिए भी बुरा भाव, वैर-भाव, दैहिक भाव या निगेटिव भाव न रखना। हर मनुष्य ने अपने दिल में दूसरों के लिए अनेक गंदगी जमा कर ली है। इससे उसी का मन अशांत व बेचैन रहता है। ये गंदगी विघ्नों को जन्म देती है। जैसे जादूगर हाथ की सफाई से कमाल का खेल दिखाते हैं, वैसे ही जो महानात्माएं बुद्धि की सफाई कर लेंगी व भगवान के कार्य में, प्रत्यक्षता के काल में कमाल करेंगी।

बड़ा दिल अर्थात उदारता, खुलापन व कंजूस न होना। खानपान के क्षेत्र में, दूसरों की पालना हमें जहां भी करनी है। जैसे कि आपको परिवार की पालना करनी है, किसी को सेवाकेन्द्र की पालना करनी है, वहां खुला दिल हो-सबको संतुष्ट करने की भावना हो, छोटी-छोटी बातों में दूसरों को तंग न करें। न जाने किसके भाग्य से सब कुछ आता है। सेवा के क्षेत्र में भी बड़ा दिल रहे तो भगवानुवाच है - बड़ा दिल होगा तो तुम्हारे भण्डारे व भण्डारी भरपूर रहेंगे।

प्रश्नः- मेरा एक प्रश्न है कि विनाश काल में सबसे कड़ा पेपर कौनसा होगा तथा उस परीक्षा में पास होने का साधन क्या है?

उत्तरः अंतिम व अति कड़ा पेपर होगा नष्टोमोहा होने का। क्योंकि मोह मनुष्य के रग-रग में समा चुका है इसलिए उससे मुक्त होना सहज काम नहीं है। वह मोह चाहे मनुष्यों से हो या स्थूल चीज़ों से। मैं विनाश की एक मोटी सी छवि प्रस्तुत कर रहा हूं। भगवानुवाच है कि विनाश में मनुष्य सरसो के दाने की तरह पिस जाएंगे। विनाश काल में एक बार ये सम्पूर्ण विश्व जैसे कि मेंटल हॉस्पिटल बन जाएगा।

विनाश की इस छवि को आप अपने से जोड़कर देखें -जो कुछ भी इन आंखों से दिखाई देता है, वो कुछ भी नहीं रहेगा, आपके मकान, आपकी दुकान, आपकी चल-अचल सम्पत्ति नष्ट हो जाएगी। तब आपको यह नहीं सोचना है कि बाबा ने हमें मदद क्यों नहीं की। परीक्षा के समय टीचर मदद नहीं कर सकता।

जो भी आपके प्रिय जन हैं, वे सब नहीं रहेंगे। उनकी मृत्यु भी विभिन्न खौफनाक तरीकों से हो सकती है। ऐसे में मोहग्रस्त व्यक्ति के मस्तिष्क पर अति कुप्रभाव पड़ेगा। स्वयं के शरीर में भी कई असाध्य रोग हो सकते हैं। स्वयं का मन उदास व चिड़चिड़ा भी हो सकता है, खुशी व शान्ति भी नष्ट हो सकती है। ऐसे में जिन्होंने अच्छा योग किया होगा, तन से यज्ञ सेवा पूर्णतया की होगी, उन्हें उनके पुण्य कर्म मदद करेंगे।

भटकती हुई आत्माओं के प्रकोप, उनकी प्रवेशता व उनकी अंतरिक्ष में उपस्थिति मनुष्यों के लिए धर्मराज की सज़ा होगी। पवित्र व शक्तिशाली आत्माएं इनसे मुक्त रह सकेंगी।

अनिद्रा, गृहयुद्ध, प्राकृतिक प्रकोप व विश्व युद्ध मनुष्यों को काल के ग्रास बनायेंगे। कहीं अकाल तो कहीं अतिवृष्टि, कहीं प्रेम का टूटना, तो कहीं नदियों में बाढ़, विनाश का ताण्डव करेंगे। परन्तु जिनके सिर पर परमात्म-छत्रछाया होगी वे स्वयं को सुरक्षित पायेंगे।

नष्टोमोहा होने के लिए स्मृति स्वरूप होना परमावश्यक है। पहले से ही अनासक्त वृत्ति बहुत मदद करेगी। अब सबको घर जाना है-यह स्मृति साक्षीभाव बढ़ायेगी तथा जिन्होंने स्वयं को विनाश के लिए तैयार कर लिया होगा वे आनंदित रहेंगे क्योंकि उन्हें स्मृति रहेगी कि देवताओं के लिए ही ये दुनिया खाली हो रही है परन्तु डरे हुए लोग तो मौत से पहले ही मर जाएंगे।

Contact e-mail - bksurya8@yahoo.com

Peace of Mind
For Cable & DTH
+91 8104777111
TATA SKY 192 airtel digital TV 686 VIDEOCON d2h 497 RELIANCE Digital TV 171
"C" Band, MPEG4 DVB-S2 Receiver-FRQ: 4054, POL: H, SYM: 13230, INSAT: 4A, DEG:83*E